62 nd Kerala School Kalolsavam, January 4 to 8, 2024, Kollam

Item Code: 958 Participant Code: 121

तुम ही आना

नैना.... जो सांझ ख्वाब देखते थे,
बिछड़ के आज रो दिए हैं, क्यू ?
नैना.... जो मिलके रात जागते थे,
सहर में पलकें मींचते हैं, क्यू ?

कर लू मैं कैसे यकीन,
तुम मेरे पास है ही नहीं,
अभी तो कल ही आया था,
तुम ख्वाबों में।

क्या इतनी बुरी थी मैं माँ
कि तुम बिन बोले चल गयी
रात - दिन बस रो रहा है
नाम लेके तेरा।

हवाओं से तेरा पता पूछता हूँ,
अब तो आजा, तुम कहीं से।
परिंदों कि तरह ये दिल है सफर में,
तुम मिला दे, जिंदगी से।

तुम ही थी किनारा मेरा,
तुम ही थी सहारा मेरा,
तुम ही थी तराना कल का,
तुम ही थी फसाना कल का।

जिसको खुदा बनाया,
सर जिसके आगे झुकाया,
वो अब कहाँ है?
लौट आ सकता है, क्या?

बरसने लगी ओस की बूंदे,
बस तुम्हारी कमी है।
बहुत आई - गई यादें,
मगर इस बार तुम ही आना।

मैंने तेरी नाम दिल रख दिया,
धड़कना तुम मुझसे।
तुम मेरा अस्त्र हैं,
तुम ही मेरा शस्त्र हैं हर घड़ी।

जैसे सावन फिर से आते हैं,
तुम भी आओ।
जैसे घड़ियाँ रुक जाते हैं,
तुम भी जाओ।